Knowledgeable Research (An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal) **ISSN 2583-6633**
Available Online: http://knowledgeableresearch.com Vol.04, No.10, October,2025

प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा, उपनिवेशवाद, वैश्वीकरण एवं चुनौतियाँ : एक अध्ययन

*** डॉ. अभिषेक कुमार तिवारी**
इंडिपेंडेंट स्कॉलर

****

Abstract: *भारतीय प्राचीन पारंपरिक ज्ञान प्रणाली विशिष्ट एवं अद्वितीय है और यह किसी भी समय के लिए प्रासंगिक हैं। भारतीय ज्ञान प्रणाली का अपना गौरवमयी एवं समृद्धशाली इतिहास है। भारतीय प्राचीन ज्ञान और शिक्षा प्रणाली मानव कल्याण के लिए दर्शन द्वारा दृढ़ता से बनाई गई थी। भारतीय ज्ञान प्रणाली एक जीवंत, विकसित होती परंपरा है जिसने अपने मौलिक विचारों को बनाए रखते हुए विभिन्न ऐतिहासिक युगों के अनुरूप खुद को लगातार संशोधित किया है। वर्तमान में इस प्राचीन ज्ञान को समकालीन शिक्षा के साथ शामिल करने का प्रयास किया जा रहा है। इससे हमें मानव कल्याण को बढ़ाने के अपने प्रयासों को बेहतर बनाने तथा एक समतामूलक समाज के निर्माण में मदद मिलेगी। इसलिए,मानव कल्याण से संबंधित उन ज्ञान, दर्शन और मूल्यों की प्रकृति तथा इतिहास का विश्लेषण करने की पुनः आवश्यकता है।भारत वह भूमि है जहाँ मानव जाति की आशाएँ और आकांक्षाएँ हमेशा पोषित हुई हैं। विज्ञान,चिकित्सा, गणित, दर्शन, धर्म और खगोल विज्ञान सभी अपनी जड़ें भारत में खोज सकते हैं। भारत को अक्सर "मानव सभ्यता का पालना", "भाषण की जननी", "कहानियों और रीति-रिवाजों की दादी" और इसी तरह की उपाधियों से जाना जाता है। कई सभ्यताएँ और संस्कृतियाँ किसी समय अपने चरम पर थीं, लेकिन समय के साथ-साथ ही उनका अंत भी हो गया। इसके बावजुद वर्तमान में भी भारतीय संस्कृति पूरी दुनिया में सबसे पुरानी जीवित संस्कृति है। क्योकि भारतीय संस्कृति या सभ्यता का आधार ज्ञान है। हमारी भारतीय संस्कृति में ज्ञान प्रचुर मात्रा में है। ब्रिटिश उपनिवेशवाद ने पारंपरिक भारतीय शिक्षा प्रणालियों को बाधित किया था। स्वदेशी भाषाओं की जगह अंग्रेजी को लाया और पश्चिमी पाठ्यक्रम शुरू किए। इससे पारंपरिक ज्ञान हाशिए पर चला गया। औपनिवेशिक शिक्षा प्रणाली ने स्वदेशी ज्ञान की कीमत पर पश्चिमी ज्ञान को प्राथमिकता दिया था। इसने पारंपरिक और आधुनिक शिक्षा के बीच एक द्वंद्व पैदा किया, जिससे देशी प्रणालियों में विश्वास की कमी हुई। पश्चिमी मूल्यों और मानदंडों को लागू करने से भारत की सांस्कृतिक पहचान के विभिन्नगौरवमयीपहलुओं का क्षरण हुआ एवं पश्चिमी वैज्ञानिक ज्ञान तथा स्वदेशी प्रणालियों के बीच एक पदानुक्रम की धारणा बनी।*

Keywords: *भारतीय ज्ञान प्रणाली, स्वदेशी, आधुनिकरण, औपनिवेशिक, वैश्वीकरण*

****

प्रस्तावना:

भारतीय ज्ञान प्रणाली की अवधारणा

सदियों से, पारंपरिक मान्यताओं, प्रथाओं और ज्ञान की एक विस्तृत विविधता से भारतीय ज्ञान प्रणाली का विकास हुआ है। जिसमे वेदों, उपनिषदों और विभिन्न शास्त्रों जैसे प्राचीन ग्रंथों से लेकर इसमें दर्शन, खगोल विज्ञान, गणित, आयुर्वेदिक चिकित्सा, कला और संगीत सहित कई विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला सम्मलित है। यह एक समग्र दृष्टिकोण प्रदर्शित करता है, जो भौतिक और आध्यात्मिक कल्याण दोनों की खोज के साथ-साथ सभी चीजों की अन्योन्याश्रयता पर जोर देता है। "वसुधैव कुटुम्बकम" जैसे विचार, जिसका अर्थ है "पूरा विश्व एक परिवार है", पारंपरिक भारतीय दर्शन के नैतिक और पारिस्थितिक पहलुओं को और पुष्ट करता हैं। भारतीय ज्ञान प्रणाली प्रेरणा और शोध का स्रोत है और इसने दुनिया के बौद्धिक इतिहास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। भारतीय ज्ञान प्रणाली का इतिहास बहुत पुराना है, जो हजारों वर्षों में विकसित हुई है।

इसमें खगोल विज्ञान, गणित, चिकित्सा और दर्शन सहित कई तरह के विषय शामिल हैं। इस समृद्ध विरासत को बड़े पैमाने पर वेद, उपनिषद, अर्थशास्त्र और मनुस्मृति जैसे प्राचीन ग्रंथों ने आकार दिया है। आर्यभट्ट, चाणक्य और आदिशंकराचार्य जैसे महत्वपूर्ण बुद्धिजीवियों ने भारत के बौद्धिक इतिहास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली नेइस ज्ञान परंपरा का संरक्षण एवं प्रसार किया है।

प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा में शिक्षा के विषयों का एक पारंपरिक वर्गीकरण किया है। जिसे"ज्ञान की चौदह शाखाएँ" अर्थात"चतुर्दश विद्यास्थान" कहा जाता है। "चतुर्दश विद्यास्थान"के अंतर्गत चार वेद (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद), छह वेदांग (शिक्षा, कल्प, व्याकरण, ज्योतिष, निरुक्त तथा छंद) एवं चार उपवेद (आयुर्वेद, धनुर्वेद, गंधर्ववेद तथा स्थापत्यवेद)सम्मलित है। ये चौदह विषय में समग्र रूप से भारतीय शिक्षा प्रणाली विभिन्न पहलुओं को सम्मलित है। इसके साथ ही चौसठ कलाओं एवं शिल्पशास्त्र की शिक्षा भी भारतीय ज्ञान परंपरा का अभिन्न अंग है। चौसठ कलाएँ, कौशल शिक्षा की पारंपरिक विधा है। जिसमेव्यवहारिक, रचनात्मक एवं बौद्धिक गतिविधियाँ सम्मिलित है। शिल्पशास्त्र प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा की विधा है, जिसमे मूर्तिकला, वास्तुकला एवं प्रतिमा विज्ञान के विषय में शिक्षा मिलती है। यह सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने में भी सहायता प्रदान करती है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली का महत्व

भारतीय ज्ञान प्रणाली अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि इसका कई अलग-अलग क्षेत्रों पर महत्वपूर्ण प्रभाव है। वेद और उपनिषद जैसे प्राचीन भारतीय लेखन आध्यात्मिकता और जीवन के सार में गहन अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं, जो न केवल धार्मिक विश्वासों को बल्कि वैश्विक दार्शनिक चिंतन को भी प्रभावित करते हैं। आर्यभट्ट और ब्रह्मगुप्त जैसे भारतीय गणितज्ञों द्वारा बीजगणित, त्रिकोणमिति और खगोल विज्ञान में महत्वपूर्ण योगदान देते हुए भारतीय ज्ञान परंपरा को एक नई दिशा दिया गया। भारत, दशमलव अंक प्रणाली और शून्य का जन्मस्थान है, जिसने गणित में दुनिया भर में प्रगति के लिए महत्वपूर्ण आधार प्रदान किया है। आयुर्वेद के रूप में जानी जाने वाली प्राचीन भारतीय चिकित्सा प्रणाली समग्र स्वास्थ्य पर बहुत जोर देती है। इसने दुनिया भर में पारंपरिक चिकित्सा को प्रभावित किया है। इसके साथ ही योग और ध्यान जैसी भारतीय-प्रेरित तकनीकें मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य दोनों को बेहतर बनाती हैं। भारतीय साहित्य में महाभारत और रामायण जैसे महाकाव्यों से लेकर कालिदास जैसी शास्त्रीय रचनाओं तक समृद्ध कहानी और काव्य परंपराएँ देखने को मिलती हैं। भारतीय मूर्तिकला और पारंपरिक नृत्य कला के ऐसे उदाहरण हैं जो देश की रचनात्मक और विविध संस्कृति को प्रदर्शित करते हैं। सांख्य, न्याय और वेदांत की दार्शनिक परंपराएँ नैतिकता, तर्क और अस्तित्व को समझने के लिए आवश्यक ज्ञान प्रदान करती हैं।

ज्ञान को व्यावहारिक उपयोग में लाने के लिए आवश्यक कौशल उतने ही महत्वपूर्ण हैं, जितने कि उस जानकारी तक पहुँचने और उसका उपयोग करने के लिए आवश्यक तकनीकी क्षमताएँ। संतुलन बनाने का कार्य प्राचीन भारतीय ज्ञान पर बहुत अधिक निर्भर करता है। "वसुधैव कुटुम्बकम" के सिद्धांत, जिसका अर्थ है "पूरा विश्व एक परिवार है" और "सर्वे

भवन्तु सुखिनः" जिसका अर्थ है "सभी सुखी रहें", वेदों के मूल ध्येय वाक्य हैं। चूँकि हमारे पूर्वजों ने इसे बचाने के लिए इतनी दूर तक काम किया, इसलिए शायद हमें अपना ध्यान संरक्षण से हटाकर उपयोग पर लगाना चाहिए। वर्तमान परिदृश्य में ब्रह्म (विश्व आत्मा) और आत्मा (व्यक्तिगत आत्मा) पर उपनिषदों के दर्शन और कर्मयोग, भक्तियोग और ज्ञानयोग पर भगवद गीता की शिक्षाओं को बरकरार रखना अत्यंत महत्वपूर्ण है।[1] दुनिया नेतृत्व के लिए भारत की ओर देख रही है, और हमें अपनी पहचान उसी परंपरा में तलाशनी चाहिए। हमारी शिक्षा प्रणाली पश्चिमीकरण के विचारों से प्रभावित है जिसके कारण अपनी पारंपरिक सुंदरता से वंचित है। हम मौजूदा शिक्षा प्रणाली में केवल साक्षरता लक्ष्यों पर ध्यान केंद्रित करते हैं। हालाँकि, यह अकेले किसी व्यक्ति में उचित बौद्धिक ज्ञान लाने के लिए पर्याप्त नहीं है। शिक्षा में भारतीय संस्कृति और इतिहास को शामिल किया जाना चाहिए ताकि इसे जीवन के एक तरीके के रूप में आत्मसात किया जा सके। कम उम्र में बच्चों को भारतीय ज्ञान प्रणाली पर आकर्षक पाठ्यक्रम प्रदान करके, भारतीय शिक्षा प्रणाली यह सुनिश्चित कर सकती है कि सभी छात्रों को उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा और एक ठोस नैतिक आधार मिले, जिससे वे नैतिक विकल्प बना सकें। हम भारत की प्राचीन ज्ञान प्रणाली के अध्ययन के माध्यम से अपने पूर्वजों के बारे में जानकर और आधुनिक दुनिया में उस ज्ञान का उपयोग करके भारतीय होने की अपनी भावना को मजबूत कर सकते हैं। संस्कृति बड़े सामाजिक संदर्भ में महत्वपूर्ण है। हमारी संस्कृति उन पुस्तकों और उनसे प्राप्त जानकारी से बहुत प्रभावित होती है जिन्हें हम पढ़ते हैं। यह पीढ़ी दर पीढ़ी विचारों और मूल्यों की निरंतरता है। इसमें हमारे इतिहास, विरासत और प्राथमिक संस्कृतियों की सराहना करके विकसित अवधारणाएँ भी शामिल हैं। इस जानकारी के होने से मौलिक सोच और नए दृष्टिकोणों को प्रेरणा मिलती है। भारत जैसे देश के लिए, जिसने प्राचीन दुनिया से बहुत सारा वैज्ञानिक ज्ञान संरक्षित किया है, इस दृष्टिकोण को अपनाने का प्रयास करना चाहिए। 2020 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति देश की स्वदेशी ज्ञान प्रणाली के संदर्भ में भारत के शैक्षिक बुनियादी ढांचे को पुनर्गठित करने का प्रयास करती है। हमारी पुरानी शिक्षा प्रणाली में विनम्रता, ईमानदारी, अनुशासन, स्वतंत्रता और हर चीज के प्रति सम्मान जैसे मूल्यों पर जोर दिया जाता था, जिसका उद्देश्य एक संपूर्ण व्यक्ति का पोषण करना था। कक्षा में जीवन के सभी क्षेत्रों पर विचार किया जाता था, क्योंकि छात्रों को वेदों और उपनिषदों के उपदेशों के अनुसार पढ़ाया जाता था। भारत की शिक्षा प्रणाली का उपयोगकर्ता के अनुकूल, यथार्थवादी और प्रासंगिक होने का एक लंबा इतिहास रहा है। नई शिक्षा नीति 2020 प्राचीन भारत के गौरवशाली इतिहास को स्वीकार करती है और वर्तमान पाठ्यक्रम में चरक, सुश्रुत, आर्यभट्ट आदि जैसे प्राचीन भारतीय शिक्षाविदों के कार्यों के एकीकरण की ओर ध्यान आकर्षित करती है।[2]

उपनिवेशवाद के बाद का युग

1947 ई. में ब्रिटिश औपनिवेशिक नियंत्रण से स्वतंत्रता की घोषणा के बाद के वर्षों में भारत में सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्रों में

महत्वपूर्ण बदलाव हुए। इस दौरान, एक नई पहचान बनाने, उपनिवेशवाद के प्रभावों से निपटने, विकास और शासन नीतियों को तैयार करने के प्रयास किए गए। इस दौरान, भारत को आर्थिक असमानता, सामाजिक अशांति और विभाजन जैसी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।[3] इन सभी ने देश के भविष्य को आकार दिया। उत्तर-औपनिवेशिक काल शोषण एवं भारतीय जनाकांक्षाओं के दमन का काल था। इस दौरान भारतीय ज्ञान प्रणाली को हानि के साथ-साथ कई तरह से लाभ भी हुआ। उत्तर-औपनिवेशिक विद्वानों ने स्वदेशी ज्ञान के पुनर्मूल्यांकन और पुनः प्राप्ति का आह्वान किया। उत्तर-औपनिवेशिक भारत ने सांस्कृतिक संकरता देखी गयी, जहाँ पारंपरिक और पश्चिमी ज्ञान प्रणालियाँ एक-दूसरे से जुड़ी हुई हैं और एक-दूसरे को प्रभावित करती हैं। यह संलयन साहित्य, कला और दर्शन जैसे क्षेत्रों में स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। स्वदेशी ज्ञान के मूल्य को बहाल करने के लिए तथाशिक्षा को उपनिवेश-मुक्त करने पर एक सतत चर्चा एवं प्रयास किया गया। इसमें पाठ्यक्रम में स्थानीय दृष्टिकोण, भाषाएँ और पारंपरिक प्रथाओं को शामिल करने पर जोर दिया गया।

उत्तर-औपनिवेशिक काल में भारतीय ज्ञान प्रणाली पर निम्नलिखित कुछ सकारात्मक प्रभाव हुए:

- औपनिवेशिक युग के दौरान औपचारिक शिक्षा के लिए समकालीन संस्थान लाए गए, जिससे पूरे देश में साक्षरता और ज्ञान बढ़ने में मदद मिली।
- पश्चिमी वैज्ञानिक तरीकों और प्रौद्योगिकी के संपर्क से समग्र विकास में मदद मिली, जिससे इंजीनियरिंग, प्रौद्योगिकी और चिकित्सा में सफलता मिली।
- आधुनिक भारत का आधार औपनिवेशिक शासकों द्वारा दूरसंचार, शहरी नियोजन और रेलमार्ग सहित बुनियादी ढांचे के विकास में किए गए निवेश से बना था।
- बढ़ती वैश्विक भागीदारी के साथ, उत्तर-औपनिवेशिक भारत ने अंतर्राष्ट्रीय सहयोग, अंतर-सांस्कृतिक संपर्क और अधिक व्यापक विश्वदृष्टि को बढ़ावा दिया।
- भारत को स्वतंत्रता मिलने के बाद, औपनिवेशिक अनुभव के परिणामस्वरूप एक लोकतांत्रिक राजनीतिक प्रणाली की स्थापना हुई, जिसने देश के लोकतांत्रिक मूल्यों को आकार दिया।
- जातिगत भेदभाव, लैंगिक समानता और वंचित समुदायों की चिंताओं को दूर करने के लिए, उत्तर-औपनिवेशिक भारत ने सामाजिक न्याय और मानवाधिकारों पर अधिक जोर दिया।
- पश्चिमी साहित्य, कला और विचारों के संपर्क में आने से और विविधतापूर्ण समाज संभव हुआ है, जिसने सांस्कृतिक परिदृश्य को बढ़ाया।
- पश्चिमी शैक्षणिक दृष्टिकोणों के समावेश ने भारत में शोध के माहौल का विस्तार किया है और इसे वैश्विक स्तर पर अधिक प्रतिस्पर्धी बनाया।

उत्तर-औपनिवेशिक काल में भारतीय ज्ञान प्रणाली पर निम्नलिखित कुछ नकारात्मक प्रभाव हुए:

- उपनिवेशवाद द्वारा पारंपरिक भारतीय सांस्कृतिक प्रथाओं को बाधित और विकृत किया गया, जिसके कारण कुछ भारतीय समूहों ने अपनी सांस्कृतिक पहचान की भावना खो दी।
- मूल भाषाओं को हाशिए पर रखा गया जिसके कारण अधिकांश भारतीय शिक्षा से वंचित होकर समाज में हासिए पर पहुँच गए क्योंकि प्रशासन और शिक्षा के लिए अंग्रेजी प्राथमिक भाषा के रूप में उभरी।
- औपनिवेशिक शिक्षा प्रणाली ने स्वदेशी ज्ञान पर पश्चिमी ज्ञान का पक्ष लेते हुए और देशी ज्ञान प्रणालियों के प्रति हीनता की भावना को बढ़ावा देते हुए अक्सर पदानुक्रम को बनाए रखने का काम किया।
- स्थानीय प्रथाओं और क्षेत्रीय पारिस्थितिकी प्रणालियों से जुड़े स्वदेशी ज्ञान पर औपनिवेशिक आर्थिक नीतियों का प्रभाव पड़ा, जिसने संसाधनों का दोहन किया और आर्थिक असमानताएँ पैदा कीं।
- औपनिवेशिक सरकार द्वारा सामाजिक विभाजन को संस्थागत रूप दिया गया, जिसके कारण जातिगत भेदभाव और शिक्षा तक असमान पहुँच जैसी समस्याएँ पैदा हुईं, जिनका आज भी समाज पर प्रभाव है।

इन हानिकारक प्रभावों के बावजूद, उत्तर-औपनिवेशिक काल में स्वदेशी भारतीय ज्ञान प्रणालियों को पुनः प्राप्त करने और पुनर्जीवित करने की आवश्यकता के बारे में समझ बढ़ी, जिसके माध्यम से सांस्कृतिक प्रथाओं, अनुसंधान और शिक्षा के लिए अधिक समावेशी और समग्र दृष्टिकोण को बढ़ावा दिया जा सके।

वैश्वीकरण के दौर में भारतीय ज्ञान प्रणाली

भारत में 1990 के दशक की शुरुआत में शुरू हुए उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरणने भारतीय सामाजिक ढांचे में महत्वपूर्ण बदलाव किये। इस दौरान व्यापार उदारीकरण, अंतर्राष्ट्रीय निवेश और वैश्विक आर्थिक एकीकरण सभी में वृद्धि हुई। इनपरिवर्तनों का लक्ष्य अंतर्राष्ट्रीय निवेश को आकर्षित करना, बाज़ारों को खोलना और सरकारी हस्तक्षेप को कम करना था।[4] भारत ने आईटी जैसे उद्योगों में उल्लेखनीय विस्तार देखा, क्रॉस-कल्चरल इंटरैक्शन को बढ़ाया और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार समझौतों में प्रवेश किया। वैश्वीकरण का अर्थव्यवस्था पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा, लेकिन आय असमानता और पर्यावरणीय मुद्दों जैसी कमियाँ भी थीं।[5] सभी बातों पर विचार करने पर, इसने भारतीय अर्थव्यवस्था का चेहरा बदल दिया और इसे विश्व मंच पर एक प्रमुख स्थान पर पहुँचा दिया। वैश्वीकरण की बदौलत भारतीयों के पास अब वैश्विक जानकारी तक बेजोड़ पहुँच है। डिजिटल तकनीक और इंटरनेट ने ज्ञान को और अधिक सुलभ बना दिया है तथा लोगों के लिए विभिन्न दृष्टिकोणों और विचारों के साथ बातचीत करना संभव बना दिया है। वैश्वीकरण की वजह से भारतीय छात्रों के पास अब विदेशों में अपनी शिक्षा प्राप्त करने के लिए अधिक विकल्प हैं। वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप संस्कृतियों का जीवंत आदान-प्रदान हुआ है, जिससे भारतीय संस्कृति को वैश्विक स्तर पर पहचान मिली है। वैश्वीकरण ने लोगों के लिए ज्ञान और सूचना के भंडार तक पहुँच को आसान बना दिया है। डिजिटल प्रौद्योगिकियों और इंटरनेट ने शिक्षा को लोकतांत्रिक बनाया है, जिससे

भारतीयों को वैश्विक विचारों, शोध और शिक्षण सामग्री की एक विस्तृत विविधता तक पहुँच मिली है। वैश्वीकरण के कारण ही भारतीय शैक्षणिक संस्थानों और उनके अंतरराष्ट्रीय समकक्षों के बीच सहयोग को बढ़ावा मिला है। यह ज्ञान, शोध और विद्वत्तापूर्ण सामग्रियों के आदान-प्रदान को प्रोत्साहित करता है, जिससे शैक्षणिक प्रणाली वैश्विक स्तर पर अधिक प्रतिस्पर्धी बनती है।

इन सबके बावजुद वैश्वीकरण ने भारतीय ज्ञान प्रणाली के समक्ष कई चुनौतियाँ भी प्रस्तुत की है। वैश्विक सांस्कृतिक प्रभावों, विशेष रूप से मीडिया और मनोरंजन के माध्यम तथा उनके प्रभुत्व से पारंपरिक भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों और रीति-रिवाजों के पतन के बारे में चिंताएँ बढ़ाया हैं।[6] ऐसे कई उदाहरण हैं जब स्वदेशी ज्ञान और रीति-रिवाजों को पश्चिमीकरण ने ग्रहण लगा दिया है। वैश्वीकरण के कारण, शिक्षा घरेलू स्तर पर सार्वजनिक वस्तु के बजाय वैश्विक स्तर पर एक निजी वस्तु बन गई है। इन दिनों, शिक्षा को वैश्विक व्यापार के उत्पाद के रूप में देखा जाता है। यूरोप को बदलने वाली वैज्ञानिक क्रांति में दशमलव प्रणाली ने बहुत मदद की, जिसकी उत्पत्ति और विकास भारत में हुआ।[7] हालाँकि अंग्रेजी में संवाद करने में सक्षम होना एक लाभ है, लेकिन शिक्षण माध्यम के रूप में इस पर बहुत अधिक जोर देने से क्षेत्रीय भाषाओं की उपेक्षा हो रही है।[8] इस परिवर्तन से भाषाई विविधता और स्थानीय ज्ञान का संरक्षण जो देशी भाषाओं में निहित है, सवालों के घेरे में आ जाता है। वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप शिक्षा असमानता और भी बदतर हो सकती है। शिक्षा के अंतर्राष्ट्रीयकरण से महानगरीय क्षेत्रों को मदद मिल सकती है, लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में इसे बनाए रखना मुश्किल हो सकता है, जिससे दोनों के बीच ज्ञान का अंतर बढ़ रहा है। वैश्वीकरण पारंपरिक पारिस्थितिक ज्ञान के लिए खतरा पैदा कर रही है, जो संधारणीय गतिविधियों के लिए आवश्यक है। एकरूप तरीकों और समकालीन कृषि तकनीकों के लिए प्रयास जैव विविधता संरक्षण के बारे में पारंपरिक ज्ञान को चुनौती दे रहे हैं। "ब्रेन ड्रेन" के रूप में जानी जाने वाली घटना, जिसमें प्रतिभाशाली लोग काम और शिक्षा की तलाश में दूसरे देशों में चले जाते हैं, जो कहीं और बेहतर संभावनाओं के आकर्षण से और भी बढ़ सकती है। इसके परिणामस्वरूप भारतीय ज्ञान पूंजी और कुशल श्रमिक खोने का खतरा लगातार बना रह रहा हैं। वैश्वीकरण के कारण, भारतीय शिक्षा अब वैश्विक रूप से अधिक प्रासंगिक है और बाजार पर केंद्रित है। हालाँकि, स्वदेशी ज्ञान और सांस्कृतिक विरासत को बनाए रखना एक बड़ी बाधा बनी हुई है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली के आधुनिकीकरण के परिणामस्वरूप प्राचीन ज्ञान और नए विकास का संश्लेषण हुआ है। इसने शिक्षा को और अधिक सुलभ बनाया है, तकनीकी नवाचार को बढ़ावा दिया है और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को प्रोत्साहित किया है।[9] परिणामस्वरूप, भारत का बौद्धिक वातावरण अधिक विविध और गतिशील हो गया है।[10] फिर भी, सांस्कृतिक प्रामाणिकता को बनाए रखने, असमानताओं को हल करने और त्वरित परिवर्तनों को समायोजित करने में चुनौतियाँ बनी हुई हैं। सभी बातों पर विचार करने पर, आधुनिकीकरण ने भारत

की ज्ञान प्रणाली पर जटिल लेकिन लाभकारी प्रभाव डाला है।[11] भारत को अपनी सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने और बढ़ावा देने पर गंभीरता से ध्यान देना चाहिए, जो देश की आत्म-भावना के लिए आवश्यक है। भारत की नई शिक्षा नीति का उद्देश्य विद्यार्थियों को स्वतंत्रता की भावना, भारत के जटिल और आकर्षक इतिहास, सांस्कृतिक विरासत, समकालीन ज्ञान आधार एवं प्रथाओं के लिए गहरी समझ प्रदान करना है। इसनीति का लक्ष्य छात्रों को मानवाधिकारों, सतत विकास और जीवन एवं वैश्विक कल्याण जैसे मुद्दों के प्रति जिम्मेदारी से प्रतिबद्ध होने के लिए आवश्यक जानकारी, कौशल, मूल्य तथा दृष्टिकोण प्राप्त करने में मदद करके उन्हें "सच्चे वैश्विक नागरिक" बनने में सहायता प्रदान करना है।भारतीय ज्ञान प्रणाली एक जीवंत, विकसित होती परंपरा है जिसने अपने मौलिक विचारों को बनाए रखते हुए विभिन्न ऐतिहासिक युगों के अनुरूप खुद को लगातार संशोधित किया है।वर्तमान में इस प्राचीन ज्ञान प्रणालीको समकालीन शिक्षा के साथ शामिल करके उन्नत समाज का निर्माण किया जा सकता है। शिक्षा में पारंपरिक प्रथाओं को पुनर्जीवित और एकीकृत करके भारतीय ज्ञान प्रणाली पर उपनिवेशवाद के नकारात्मक प्रभाव का मुकाबला कियाजा सकता है। वैश्वीकरण के युग में, पारंपरिक ज्ञान को संरक्षित करने और वैश्विक रुझानों के अनुकूल होने के बीच एक नाजुक संतुलन है। तेजी से बदलती दुनिया की जटिलताओं को समझते हुए सांस्कृतिक विरासत से जुड़े रहने की आवश्यकताहै, जिसमे भारतीय ज्ञान प्रणाली सहायक सिद्ध हो सकती है।

निष्कर्ष:

भारत को अपनी सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने और बढ़ावा देने पर गंभीरता से ध्यान देना चाहिए, जो देश की आत्म-भावना के लिए आवश्यक है। भारत की नई शिक्षा नीति का उद्देश्य विद्यार्थियों को स्वतंत्रता की भावना और भारत के जटिल और आकर्षक इतिहास, सांस्कृतिक विरासत और समकालीन ज्ञान आधार और प्रथाओं के लिए गहरी सराहना देना है। नीति का लक्ष्य छात्रों को मानवाधिकारों, सतत विकास और जीवन और वैश्विक कल्याण जैसे मुद्दों के प्रति जिम्मेदारी से प्रतिबद्ध होने के लिए आवश्यक जानकारी, कौशल, मूल्य और दृष्टिकोण प्राप्त करने में मदद करके उन्हें "सच्चे वैश्विक नागरिक" बनने में मदद करना है।

References

1. बी. ए. उपाध्याय, *भारतीय दर्शन*, चौखम्भा, संस्कृत भवन, वाराणसी, 2021, पृ.109.
2. नेशनल एजुकेशन पालिसी, एम. एच. आर. डी., नई दिल्ली, 2020
3. राकेश त्रिवेदी, *भारतीय शिक्षा का इतिहास*, ओमेगा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 202, पृ.152.
4. धर्मानंद कोसांबी, *भारतीय संस्कृति और अहिंसा* (अनु. विश्वनाथ दामोदर शोलापुरकर), हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर, बंबई, 1957, पृ. 185.

5. राहुल सांकृत्यायन, *हिन्दी काव्यधारा*, किताबमहल, इलाहाबाद, 1945, पृ.123.
6. एस दासगुप्ता, *भारतीय दर्शन का इतिहास*- खंड 1, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, लंदन, 1922, पृ.121.
7. टी. एस. खलील, *इंडियन नॉलेज सिस्टम : अर्थशास्त्र बाय कौटिल्य*, नोशन प्रेस, कैलिफोर्निया, 2023, पृ.311.
8. सुनीति कुमार, चटर्जी, *इण्डो-आर्यन एंड हिंदी, वर्नाक्युलर सोसाइटी*, अहमदाबाद, 1942, पृ.213.
9. र. मालवीय, *शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय परिपेक्ष्य*, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, 2014, पृ.24.
10. डी. चट्टोपाध्याय, *भारतीय दर्शन : सरल परिचय*, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008, पृ.231.
11. ई. एफ., पाजिटर., *एनसियेंट इंडियन हिस्टोरिकल ट्रेडिशन*, ऑक्सफ़ोर्ड प्रेस, लंदन, 2016, पृ. 97.

*Corresponding Author: Abhishek Kumar Tiwari
E-mail: at1227618@gmail.com
Received: 09 September,2025; Accepted: 23 October,2025. Available online: 30 October, 2025
Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension)
This work is licensed under a Creative Commons Attribution-Noncommercial 4.0 International License